अध्याय 4: हरिद्वार

विषय-सूची 8 प्रश्नावली · 22 प्रश्न

प्रश्नावली 4.1	पाठ से — मेरी समझ से (सही उत्तर चुनिए; ★ एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं)	6 प्रश्न
प्रश्नावली 4.2	मिलकर करें मिलान — शब्द और संदर्भ	1 प्रश्न
प्रश्नावली 4.3	मिलकर करें चयन — उचित निष्कर्ष पर ✓	6 प्रश्न
प्रश्नावली 4.4	सोच-विचार के लिए	3 प्रश्न
प्रश्नावली 4.5	अनुमान और कल्पना से	3 प्रश्न
प्रश्नावली 4.6	'है' और 'हैं' का उपयोग (आदरार्थ बहुवचन)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 4.7	भावों की पहचान	1 प्रश्न
प्रश्नावली 4.8	काल की पहचान	1 प्रश्न

प्रश्नावली 4.1 — पाठ से — मेरी समझ से (सही उत्तर चुनिए; ★ एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं)

प्रश्न 1

"सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं" — इस पंक्ति का क्या अर्थ है? (लेखक के अनुसार सज्जन लोग बिना पूछे स्वार्थरहित फल देते हैं / लेखक फलदार वृक्षों की उदारता को मानवीय रूप में व्यक्त कर रहे हैं / लेखक का मानना था कि हरिद्वार के सभी दुकानदार बहुत सज्जन थे / लेखक को पत्थर मारकर पके हुए फल तोड़कर खाना पसंद था)

हल

यह पंक्ति एक अलंकारिक (मानवीकरण) कथन है — जैसे वृक्ष पत्थर मारने पर भी बदले में मीठे फल ही देते हैं, वैसे ही सज्जन व्यक्ति बुराई के बदले भी भलाई करते हैं।
अतः लेखक वृक्षों की उदारता को मानवीय गुण के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

उत्तर: लेखक के अनुसार सज्जन लोग बिना पूछे स्वार्थरहित फल (भलाई) देते हैं। (★ वृक्षों की उदारता को मानवीय रूप में व्यक्त करने वाला भाव भी स्वीकार्य है।)

प्रश्न 2

"वैराग्य और भक्ति का उदय होता था" — इस कथन से लेखक का कौन-सा भाव प्रकट होता है? (शारीरिक थकान और मानसिक बेचैनी / आर्थिक संतोष और सामाजिक विकास / मानसिक शांति और आध्यात्मिक अनुभव / सांस्कृतिक समृद्धता और पारिवारिक प्रेम)

हल

हरिद्वार एक पवित्र तीर्थस्थल है; वहाँ की गंगा, प्रकृति और वातावरण लेखक के मन में शांति और भक्ति का भाव जगाते हैं।

उत्तर: मानसिक शांति और आध्यात्मिक अनुभव।

प्रश्न 3

"पत्थर पर का भोजन सोने की थाली के भोजन से भी बढ़कर था" — इस वाक्य का सर्वाधिक उपयुक्त निष्कर्ष क्या है? (संतुष्टि में सुख होता है / सुखी लोग पत्थर पर भोजन करते हैं / लेखक के पास सोने की थाली नहीं थी / पत्थर पर रखा भोजन अधिक स्वादिष्ट होता है)

हल

लेखक ने गंगा के तट पर सादगी से भोजन किया और उसमें जो संतोष तथा आनंद मिला, वह सोने की थाली के भोजन से भी बढ़कर था।
इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि सच्चा सुख वस्तुओं में नहीं, संतोष में है।

उत्तर: संतुष्टि में सुख होता है।

प्रश्न 4

"एक दिन मैंने श्री गंगा जी के तट पर रसोई करके पत्थर ही पर, जल के अत्यंत निकट परोसकर भोजन किया" — यह प्रसंग किस मूल्य को बढ़ावा देता है? (अभिलाषा और लालच / मानवता और देशप्रेम / सादगी और आत्मनिर्भरता / स्वच्छता और प्रकृति प्रेम)

हल

लेखक ने बिना किसी तड़क-भड़क के, पत्थर पर, प्रकृति (गंगा) के अत्यंत निकट सादा भोजन बनाया और खाया।
यह प्रसंग सादगी, आत्मनिर्भरता और प्रकृति-प्रेम जैसे मूल्यों को बढ़ावा देता है।

उत्तर: सादगी और आत्मनिर्भरता। (★ 'स्वच्छता और प्रकृति प्रेम' भी उपयुक्त उत्तर है।)

प्रश्न 5

लेखक का हरिद्वार अनुभव मुख्यतः किस प्रकार का था? (राजनीतिक / आध्यात्मिक / सामाजिक / प्राकृतिक)

हल

लेखक का पूरा वर्णन गंगा, स्नान, तीर्थ, भक्ति और मन की शांति के इर्द-गिर्द है, जो एक आध्यात्मिक अनुभव है।

उत्तर: आध्यात्मिक। (★ प्रकृति-सौंदर्य का वर्णन भी है, इसलिए 'प्राकृतिक' भी आंशिक रूप से स्वीकार्य है।)

प्रश्न 6

पत्र की भाषा का एक मुख्य लक्षण क्या है? (कठिन शब्दों का प्रयोग और बोझिलता / मुहावरों का अधिक प्रयोग / सरलता और चित्रात्मकता / जटिलता और संक्लिष्टता)

हल

यह पाठ पत्र-शैली में लिखा गया है; इसकी भाषा सरल है और दृश्यों का ऐसा वर्णन करती है कि पाठक के सामने चित्र-सा खिंच जाता है।

उत्तर: सरलता और चित्रात्मकता।

प्रश्नावली 4.2 — मिलकर करें मिलान — शब्द और संदर्भ

प्रश्न 1

स्तंभ 1 (हरिद्वार, गंगा, भगीरथ, चण्डिका, भागवत, शालचीनी) को स्तंभ 2 के सही संदर्भ से मिलाइए — (1) मान्यताओं के अनुसार दुर्गा का एक रूप। (2) अठारह पुराणों में सर्वश्रेष्ठ एक पुराण, जिसमें अधिकांश श्रीकृष्ण संबंधी कथाएँ हैं। (3) उत्तराखंड में स्थित प्रसिद्ध तीर्थस्थान, जहाँ से गंगा पहाड़ों को छोड़कर मैदान में उतरती है। (4) एक सुगंधित वृक्ष जो दक्षिण भारत/महाराष्ट्र में मिलता है; इसकी छाल दवा और मसाले के काम आती है, इसे रामचीनी भी कहते हैं। (5) भारत की एक प्रधान नदी जो हिमालय से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है; इसके अनेक नाम हैं — भागीरथी, त्रिपथगा, अलकनंदा, मंदाकिनी, सुरसरी। (6) अयोध्या के सूर्यवंशी राजा जो घोर तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लाए।

हल

हरिद्वार — उत्तराखंड का प्रसिद्ध तीर्थस्थान, जहाँ से गंगा मैदान में उतरती है।
गंगा — हिमालय से निकलने वाली प्रधान नदी (भागीरथी/त्रिपथगा/अलकनंदा आदि)।
भगीरथ — अयोध्या के सूर्यवंशी राजा जो तपस्या से गंगा को पृथ्वी पर लाए।
चण्डिका — दुर्गा का एक रूप।
भागवत — अठारह पुराणों में सर्वश्रेष्ठ, श्रीकृष्ण-कथा प्रधान पुराण।
शालचीनी — सुगंधित छाल वाला वृक्ष (रामचीनी)।

उत्तर: हरिद्वार → (3); गंगा → (5); भगीरथ → (6); चण्डिका → (1); भागवत → (2); शालचीनी → (4)।

प्रश्नावली 4.3 — मिलकर करें चयन — उचित निष्कर्ष पर ✓

प्रश्न 1

"पर्वतों पर अनेक प्रकार की वल्ली (लताएँ) हरी-भरी सज्जनों के शुभ मनोरथों की भाँति फैलकर लहलहा रही हैं।" उचित निष्कर्ष चुनिए — (क) लताओं का फैलना सज्जनों की शुभ इच्छाओं की तरह सौम्यता और सुंदरता को दर्शाता है। (ख) सज्जनों की शुभ इच्छाएँ लताओं के समान फैल जाती हैं।

हल

पंक्ति में लताओं के फैलाव की तुलना सज्जनों के शुभ मनोरथों से की गई है — यह सौम्यता और सुंदरता का भाव देती है।

उत्तर: (क) लताओं का फैलना सज्जनों की शुभ इच्छाओं की तरह सौम्यता और सुंदरता को दर्शाता है।

प्रश्न 2

"बड़े-बड़े वृक्ष भी ऐसे खड़े हैं मानो एक पैर से खड़े तपस्या करते हैं और साधुओं की भाँति घाम, ओस और वर्षा अपने ऊपर सहते हैं।" उचित निष्कर्ष — (क) वृक्षों की स्थिति साधुओं जैसी है जो हर मौसम को सहने के लिए विवश हैं। (ख) वृक्षों की स्थिति साधुओं जैसी है जो हर मौसम को सहते हुए तपस्या करते हैं।

हल

वृक्षों की तुलना तपस्या करते साधुओं से की गई है जो हर मौसम को सहन करते हैं।

उत्तर: (ख) वृक्षों की स्थिति साधुओं जैसी है जो हर मौसम को सहते हुए तपस्या करते हैं।

प्रश्न 3

"यहाँ के पक्षी निर्भय होकर कलरव करते हैं।" उचित निष्कर्ष — (क) यहाँ के पक्षी प्रकृति में सुरक्षित अनुभव करते हैं, इसलिए वे स्थिर रहकर कलरव करते हैं। (ख) यहाँ के पक्षी नगर से डरकर इस जगह आ गए हैं, इसलिए वे कलरव करते हैं।

हल

शांत और सुरक्षित प्राकृतिक वातावरण के कारण पक्षी निर्भय होकर चहचहाते हैं।

उत्तर: (क) यहाँ के पक्षी प्रकृति में सुरक्षित अनुभव करते हैं, इसलिए वे स्थिर रहकर कलरव करते हैं।

प्रश्न 4

"जल यहाँ का अत्यंत शीतल और मीठा भी है।" उचित निष्कर्ष — (क) गंगाजल की ठंडक और मिठास का अनुभव बहुत मनोहारी है। (ख) गंगाजल की शीतलता और मिठास से शक्कर और बरफ बनाई जा सकती है।

हल

लेखक गंगाजल की शीतलता और मिठास के मनोहारी अनुभव का वर्णन कर रहा है, न कि शक्कर/बरफ बनाने की बात।

उत्तर: (क) गंगाजल की ठंडक और मिठास का अनुभव बहुत मनोहारी है।

प्रश्न 5

"एक दिन मैंने श्री गंगा जी के तट पर रसोई करके पत्थर ही पर, जल के अत्यंत निकट परोसकर भोजन किया।" उचित निष्कर्ष — (क) लेखक ने भोजन इसलिए बनाया क्योंकि गंगा का पानी बहुत गरम था और यह पकाने में सहायक था। (ख) लेखक ने गंगा के समीप बैठकर भोजन किया, जिससे उनकी प्रकृति से निकटता झलकती है।

हल

लेखक का प्रकृति (गंगा) के अत्यंत निकट बैठकर भोजन करना उनकी प्रकृति-प्रेम और निकटता को दर्शाता है।

उत्तर: (ख) लेखक ने गंगा के समीप बैठकर भोजन किया, जिससे उनकी प्रकृति से निकटता झलकती है।

प्रश्न 6

"निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा।" उचित निष्कर्ष — (क) लेखक चाहता है कि पत्र को महत्व देकर कहीं स्थान दिया जाए, यानी इसे पढ़ा और सँजोया जाए। (ख) लेखक चाहता है कि पत्र को महत्व देकर प्रकाशित किया जाए।

हल

'स्थानदान' का अर्थ है पत्र को उचित महत्व देकर सँजोना/स्थान देना — छपवाने की बात यहाँ नहीं है।

उत्तर: (क) लेखक चाहता है कि पत्र को महत्व देकर कहीं स्थान दिया जाए, यानी इसे पढ़ा और सँजोया जाए।

प्रश्नावली 4.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

"यहाँ आकर हर व्यक्ति के अंदर धार्मिक भाव जाग जाता है।" — लेखक का यह कथन क्या दर्शाता है?

हल

यह कथन हरिद्वार के पवित्र और शांत वातावरण के प्रभाव को दर्शाता है।
गंगा, तीर्थ और प्राकृतिक सौंदर्य के कारण वहाँ पहुँचते ही व्यक्ति के मन में श्रद्धा, भक्ति और शांति का भाव स्वतः जाग उठता है।

उत्तर: यह दर्शाता है कि हरिद्वार का पवित्र, शांत वातावरण हर व्यक्ति के मन में स्वाभाविक रूप से श्रद्धा और भक्ति का भाव जगा देता है।

प्रश्न 2

"पंडे भी यहाँ बड़े विलक्षण संतोषी हैं। एक पैसे को लाख करके मान लेते हैं।" — यह कथन आज के समाज में कितना सच है? क्या आप ऐसे संतोषी लोगों को जानते हैं?

हल

यह कथन संतोष की भावना की ओर संकेत करता है — जो थोड़े में भी प्रसन्न रहते हैं।
आज के भौतिकवादी समाज में ऐसे संतोषी लोग कम होते जा रहे हैं, फिर भी आज भी अनेक सरल-हृदय व्यक्ति (जैसे कुछ किसान, साधु, सेवाभावी लोग) थोड़े में संतुष्ट रहते हैं।

उत्तर: यह संतोष की भावना दर्शाता है; आज के भौतिकवादी समय में ऐसे संतोषी लोग कम हैं, पर आज भी अनेक सरल एवं सेवाभावी व्यक्ति थोड़े में संतुष्ट रहते हैं। (विद्यार्थी अपने अनुभव से उदाहरण जोड़ें।)

प्रश्न 3

"यह स्थान भी उस क्षेत्र में टिकने योग्य ही है।" — आपके विचार से लेखक ने इस स्थान को 'टिकने योग्य' क्यों कहा है? इसमें कौन-सी विशेषताएँ होंगी?

हल

'टिकने योग्य' से आशय है ठहरने/रुकने के लायक — जहाँ मन को शांति और आनंद मिले।
हरिद्वार में गंगा, प्राकृतिक सौंदर्य, शांत वातावरण, तीर्थ की पवित्रता, स्वच्छ जल-वायु और सादगीपूर्ण जीवन — ऐसी अनेक विशेषताएँ हैं जो इसे ठहरने योग्य बनाती हैं।

उत्तर: क्योंकि यहाँ गंगा, प्राकृतिक सौंदर्य, शांत-पवित्र वातावरण और स्वच्छ जल-वायु है जो मन को शांति देते हैं — ये विशेषताएँ इसे ठहरने (टिकने) योग्य बनाती हैं।

प्रश्नावली 4.5 — अनुमान और कल्पना से

प्रश्न 1

"सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं।" — यदि पेड़-पौधे सचमुच मनुष्यों की तरह व्यवहार करने लगें तो क्या होगा?

हल

यदि पेड़-पौधे मनुष्यों की तरह व्यवहार करने लगें तो वे भी सुख-दुख अनुभव करते, बोलते और प्रतिक्रिया देते। संभव है वे अपने साथ हुई क्रूरता (काटे जाने) पर विरोध करते; पर यदि वे सज्जनों जैसे उदार रहते तो बुराई के बदले भी भलाई (फल, छाया, प्राणवायु) ही देते।

उत्तर: वे भी सुख-दुख अनुभव करते और प्रतिक्रिया देते; फिर भी उदार स्वभाव के कारण संभवतः बुराई के बदले भी भलाई (फल, छाया, वायु) ही देते। (कल्पना-आधारित उत्तर।)

प्रश्न 2

पाठ में 'गंगा' शब्द के साथ 'श्री' और 'जी' लगाया गया है (श्री गंगा जी)। आपके अनुसार लेखक ने ऐसा क्यों किया होगा?

हल

'श्री' और 'जी' आदर एवं श्रद्धा प्रकट करने वाले शब्द हैं।
लेखक गंगा को पवित्र और पूज्य (माता के समान) मानता है, इसलिए आदर प्रकट करने के लिए 'श्री गंगा जी' लिखा है।

उत्तर: क्योंकि लेखक गंगा को पवित्र एवं पूज्य मानता है; 'श्री' और 'जी' आदर-श्रद्धा प्रकट करने के लिए जोड़े गए हैं।

प्रश्न 3

कल्पना कीजिए कि आप हरिद्वार किसी श्रवणबाधित या दृष्टिबाधित व्यक्ति के साथ गए हैं। उसकी यात्रा को अच्छा बनाने के लिए कुछ सुझाव दीजिए।

हल

दृष्टिबाधित साथी के लिए — स्थानों का सजीव मौखिक वर्णन करें, गंगा की लहरों की ध्वनि, घंटियों और आरती का स्वर सुनने दें, वस्तुओं/जल को स्पर्श करके अनुभव कराएँ, हर कदम पर सहारा दें।
श्रवणबाधित साथी के लिए — इशारों/सांकेतिक भाषा या लिखकर बताएँ, दृश्यों (गंगा, पर्वत, आरती) को दिखाएँ, चित्र/लिखित जानकारी दें, भीड़ में हाथ पकड़कर साथ रखें।
दोनों के लिए — धैर्य रखें, सुरक्षा का ध्यान रखें और उन्हें सम्मान के साथ यात्रा का आनंद लेने दें।

उत्तर: दृष्टिबाधित के लिए — दृश्यों का मौखिक वर्णन, ध्वनियों व स्पर्श से अनुभव, हर कदम पर सहारा; श्रवणबाधित के लिए — संकेत/लिखकर बताना, दृश्य दिखाना; दोनों के लिए धैर्य, सुरक्षा और सम्मान।

प्रश्नावली 4.6 — 'है' और 'हैं' का उपयोग (आदरार्थ बहुवचन)

प्रश्न 1

'आदरार्थ बहुवचन' को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त शब्द (है/हैं) से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए — (1) प्रधानाचार्य जी विद्यालय में नहीं ___, वे अभी सभा में उपस्थित ___। (2) माता-पिता हमारे जीवन के मार्गदर्शक होते ___। (3) मेरी बहन बाजार जा रही ___। (4) बाहर फेरीवाला ___, उसे बुला लाओ। (5) डाकिया जी आए ___। (6) आप तो बहुत दिन बाद आए ___, आपका स्वागत ___। (7) डॉक्टर साहब बहुत विद्वान ___। (8) आपके माता-पिता कहाँ ___? (9) ये हमारे हिंदी के अध्यापक ___। (10) बंदर पेड़ पर उछल-कूद कर रहा ___।

हल

आदर प्रकट करने के लिए एकवचन आदरणीय संज्ञा के साथ भी 'हैं' का प्रयोग होता है (आदरार्थ बहुवचन); सामान्य एकवचन के साथ 'है' आता है।
(1) नहीं हैं / उपस्थित हैं — प्रधानाचार्य जी (आदर)
(2) होते हैं — माता-पिता (बहुवचन/आदर)
(3) रही है — मेरी बहन (सामान्य एकवचन)
(4) है — फेरीवाला (सामान्य एकवचन)
(5) हैं — डाकिया जी (आदर)
(6) आए हैं / स्वागत है — आप (आदर)
(7) हैं — डॉक्टर साहब (आदर)
(8) हैं — माता-पिता (आदर)
(9) हैं — अध्यापक (आदर)
(10) है — बंदर (सामान्य एकवचन)

उत्तर: 1. हैं, हैं; 2. हैं; 3. है; 4. है; 5. हैं; 6. हैं, है; 7. हैं; 8. हैं; 9. हैं; 10. है।

प्रश्नावली 4.7 — भावों की पहचान

प्रश्न 1

नीचे दी गई पंक्तियों में कौन-सा भाव प्रकट होता है, पहचानिए — (1) पत्थर पर का भोजन सोने की थाली के भोजन से भी बढ़कर था। (2) चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था। (3) पंडे भी यहाँ बड़े विलक्षण संतोषी हैं; एक पैसे को लाख करके मान लेते हैं। (4) सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं। (5) हर तरफ पवित्रता और प्रसन्नता बिखरी हुई थी।

हल

(1) संतोष — कम/सादे साधन में भी संतुष्टि और सुख।
(2) वैराग्य और भक्ति — सांसारिक मोह से हटकर ईश्वर की ओर झुकाव।
(3) संतोष — थोड़े में ही प्रसन्न रहना।
(4) उदारता/परोपकार — बुराई के बदले भी भलाई करना।
(5) प्रसन्नता/श्रद्धा — पवित्र वातावरण से मन में प्रसन्नता और श्रद्धा का भाव।

उत्तर: (1) संतोष; (2) वैराग्य और भक्ति; (3) संतोष; (4) उदारता/परोपकार; (5) प्रसन्नता/श्रद्धा।

प्रश्नावली 4.8 — काल की पहचान

प्रश्न 1

नीचे दी गई पंक्तियों में क्रिया किस काल को प्रदर्शित कर रही है? (भूतकाल/वर्तमान काल/भविष्य काल) — (1) निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा। (2) यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है। (3) वृक्ष ऐसे हैं कि पत्थर मारने से फल देते हैं। (4) चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था। (5) मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर के बंगले पर टिका था।

हल

(1) 'दीजिएगा' — भविष्य काल।
(2) 'घिरी है' — वर्तमान काल।
(3) 'देते हैं' — वर्तमान काल।
(4) 'उदय होता था' — भूतकाल।
(5) 'टिका था' — भूतकाल।

उत्तर: (1) भविष्य काल; (2) वर्तमान काल; (3) वर्तमान काल; (4) भूतकाल; (5) भूतकाल।